मध्य ज

वर्ष 13

अंक 1

26 जनवरी, 2019





स्टाफ क्लब

सी.एस.आई.आर- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर, हिमाचल प्रदेश, भारत।

मंथन

स्टाफ क्लब, सी.एस.आई.आर.- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर

वर्ष 13

अंक 1

26 जनवरी, 2019

<u> आमुख</u>

स्टाफ क्लब की पित्रका "मंथन" 2019 का पहला अंक आपके समकक्ष प्रस्तुत है। आपके अन्दर विद्यमान वे प्रतिभायें, जिन्हें आप बोल कर या अन्य किसी रूप में व्यक्त नहीं कर सकते, आप उन्हें मंथन के माध्यम से लघुलेख, कथा, कलाकृति, रेखाचित्र, कविता या अन्य किसी भी रूप में व्यक्त कर सकते हैं तथा छिपी प्रतिभा को निखार सकते हैं।

"मंथन की भावना है- भावनाओं का मंथन"

स्टाफ क्लब के सभी सदस्यों एवं उनके परिजनों से निवेदन है कि वे मंथन के आगामी अंकों के लिए प्रविष्टियां देने की कृपा करें ताकि मंथन का अगला अंक समय से प्रकाशित किया जा सके।

इस अंक में प्रविष्टियां देने वालों एवं सहयोग करने वालों का स्टाफ क्लब की ओर से धन्यवाद।

संपादक: शशी भूषण एंव म्खत्यार सिंह

संकलन: सौरभ शर्मा

विषय सूची वर्ष 13 अंक 1 26 जनवरी, 2019 क्रम संख्या शीर्षक लेखक प्रष्ठ संख्या 1. संग वक्त के अजय कुमार शुभम गुलेरिया 2. सी.एस.आई.आर. के निदेशक 5 धानवी उनियाल 3. A Lesson Learnt 6 धर्मेश 7 4. नासमझ 5. वृक्ष के लिए वंदना अशोक गहलोत 8 धर्मेश 6. अन्नदाता 9 राहुल देव गौतम 7. संजीवनी 10 8. Who you want to Be, the choice is yours मीनाक्षी 11 9. हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, के परिवार के बच्चों की कृतियाँ आदित्य द्विवेदी 10. 11 अरविंद कांत 11. 12 रूबी शर्मा 12. 13 नेहल शर्मा 13. 14 प्रियान्श् बिष्ट 14. 15 तविष बिष्ट 15. 16 16. ब्रहमी उनियाल 17 घृताशी नड्डा 17. 18 हर्षीनी रेड्डी 18. 19 स्चेता रॉय 19. 20 हर्षीनी रेड्डी 20. 21 21. समीर 22 अनी अग्निहोत्री 22. 23 23. अरविंद कांत 24 सौमिल 24. 25 25. असिकनी शर्मा 26 जसप्रीत कौर 26. 27 27. उमाक्षी 28 28. धरम सिंह 29 29. देवांगना गाइन 30 दीप्तांश् गाइन 30. 31

||| संग वक्त के |||

याद बहुत आता है बीता हुआ बचपन, जब बहुत सच्चे थे, सीधे थे, मासूम थे, नादान थे, हम। वो माँ का आंचल दोपहर की धूप, हँसी के ठहाके, सारा दिन खेलना भाई बहन से लड़ना, डाँट पड़ने पर खाने को रूठना, माँ के मनाने के इंतजार करना।

याद बहुत आता है, वो स्कूल जाना, कॉपी भूलने का बहाना, दोस्तो का लंच चुराना। बेसबरी से गर्मी की छुट्टीयों का इंतज़ार करना, दो महीने का होमवर्क दस दिन में करना, याद बहुत आते हैं, जिंदगी के वो हसीन पल जो हमने जी लिये।

वक्त बदला, क्लास बदली, स्कूल बदला, डिग्रीयाँ होती गयी, लोग मिलते गये, बिछुड़ते गए, उम्र कटती गयी। छाँव माँ के आंचल की कम होती गयी, गरिंदशें जिंदगी की बढ़ती गयी, हँसी और मास्मियत हमारी घटती गयी।

जब अंदर से खाली हो लिये, थाली के बैंगन हो लिये, तो सहारे जिंदगी के ढूंढने चल दिये, शायद जिंदगी में कोई हमारी खुशीयाँ ले आये, वीरानगी को रवानगी बना जाये। पर यहाँ भी आप सिर्फ दिमाग पर जोर लगा दिये, अपने दिल से पूछ लेना, आप उसका हर मशवरा ठुकरा दिये।

अब आप कहेगें मजबूरियाँ ऐसा करा गयी, दिल की बात होंठों पर दबा गयी,
जानते आप भी हो शायद, अपने फायदे को नाम दे कर मजबूरीयों का आपसे खता हो गयी।
वक्त के इशारे पर आप हो लिये, झूठ को सच और सच को झूठ बोल दिए,
वक्त लगे तो जरूर हिसाब माँगना अपना कभी खुद से, कि वक्त के संग आप क्या से क्या हो लिये।

अजय कुमार शर्मा

||| सी.एस.आई.आर. के निदेशक |||

हमारे प्यारे निदेशक महोदय आते हैं। सबके मन को भाते हैं।।

वैज्ञानिकों, तकनिकी अधिकारीयों और अध्येताओं, की मीटिंग बुलाते हैं। दुनिया भर का ज्ञान बताते हैं।।

नई तकनीकों और उत्पादों के बारे में बताते हैं। आज यहाँ तो कल वहां जाते हैं, तब जाके हमारे लिए फण्ड लाते हैं।।

आसान नहीं है निदेशक बनना। एक दिन निदेशक की ज़िन्दगी जी के तो देखों, दिन में तारे नज़र आ जायेगे दोस्तो।।

शुभम गुलेरिया

||| A LESSON LEARNT |||

A four-year-old girl, was standing all alone waiting for somebody but the person never turned up. I was inside the Clare's Coffee, enjoying the taste and warmth of my coffee with a pineapple muffin. Suddenly, I observed her and something made me sympathetic towards her. The girl, in polka-dot dress, started crying as it was getting dark. I immediately, got up, paid my money and rushed towards her. First, she got scared and tried to slap me Hard! But, soon, she got friendly. The girl named Renu, was new to this place and had come to park to enjoy the slides. I tucked her up in my shawl and went immediately to the police station. Police promised to search her mother. Till then, I shared my muffin with her and took her to the park. While she slided and swinged, she told me something that made me clear that she was very mature. Her parents died when she was just two-years-old. She, from that time, started living with her grandmother. She had stopped asking for anything. This supported that she was shy. She told me that she sometimes feels very lonely. I asked where she lived. She told me that she lived near the turner point. I was surprised by her quick replies. But, the most important she told me, well, she didn't tell me, I overheard her muttering to herself and I found that she secretly helped the orphaned children by providing them love besides providing necessities from her pocket money. She even celebrated her birthday with them. As she herself had faced it, she didn't want anyone else to face it. Our thoughts were diverted by a loud cry of joy and a dog's bark (cheerful). Renu, towards the lady standing beside the policeman; I guessed she was her grandmother; Granny! she exclaimed. I asked her the question, which I was thinking to ask after she told that her parents were no more, I asked who 'her mother 'was. She pointed towards the dog! 'She only saved my life by carrying me to my granny, the day the accident happened and my parents died' then she went. I was shocked for a moment or so. I, then thanked the policeman. She too went smiling feebly. I thought what a great lesson she just taught me. A small girl can think so much I never thought. She told me what life can bring and how to overcome it. She never cried in our convesation! And how we can find best mates in nature too! I now believe that the problems faced by us are far easy and nothing in comparison to others. The girl had CANCER, she won, was broken by her parents' death due to accident and now, she is bald, beautiful and a beloved one!

Dhanvi Uniyal

||| नासमझ |||

काश हम समझ सकते उनके दिल के अरमान ।

> चाहिए थी उनको अपनी ज़मीन अपना आसमान।

खुश रहते हैं वो हमेशा मैं तो यही सोंचता था।

> पता चला है आज दिल में कितना दर्द छिपा था।

काश वो हमसे इकबार कह देते अपने दिल की बात ।

पूरी करने को ख्वाहिश उनकी कर देता मैं एक दिन रात ।

गिला - सिकवा किया नहीं जीवन में कभी हमसे कोई ।

> हर गम वो अपना हमसे सीने में छुपाए जा रहे थे।

सायद कोई इसरा, मुझको उन्होंने किया तो होगा।

> नासमझ, जो हम, अपनी धुन में चले जा रहे थे।

काश वो ख्वाब उनका कर पाते हम इस जीवन में पूरा ।

> खुशी से खिला जाता नूर सा उनका नूरानी चेहरा।

> > धर्मेश

|| वृक्ष के लिए वंदना.... ||| Veneration for tree...

"O Valiant

Child of the Earth you declared a war

To liberate her from that for trees of desert

You bewitched dust, scaled peaks, wrote on stone

In Leafy characters

Your battle tales.

You spread your code over trackless wastes.....

Man, whose life is in you, who is soothed

By your cool shade, strengthened by your power.

O Tree, Friend of Man,

I speak today for him as I make

This verse homage,

As I dedicate the offering to you"

"यह कविता नीम वृक्ष को समर्पित है जिस पर मैंने पीएच. डी. का अनुसंधान कार्य किया है।"

अशोक गहलोत

||| अन्नदाता |||

अन्नदाता के पास सिर्फ होती है आस। पहले बरसात, खाद और बैंक लोन की,

> फिर अच्छी फसल का सुखद अहसास। पूरी होगी उसकी आस इसी उम्मीद में

रखता नहीं कमी मेहनत करने में। देख लहलहाती फसल अपने खेतों में

> सोंचता, अब सारा कर्ज दूँगा उतार मैं। बच्चों के लिए नए - नए कपड़े लाऊंगा

पत्नी को भी साड़ी नई दिलाऊंगा। परन्त्, फसल जब मंडी को लेकर जाता

> मेहनत का भी दाम नहीं वह पाता। टूट जाती है अन्नदाता की हर आस

बढ़ता रहता कर्ज उस पर दिन - रात। समस्याएँ उसकी बढ़ती रहती हैं ऐसे

बरसात में बढ़ती है अनवांछित घास जैसे। करते हैं सभी बात अन्नदाता की

इससे कम नहीं होती समस्याएँ उसकी। पर करता नहीं उसकी मदद कोई

उदासीन है समाज और सरकारें भी सोई।

हो कर मायूस वह मौत को गले लगता असल में वह करता नहीं आत्महत्या।

होती है ये सिस्टम के द्वारा हत्या। होती है ये सिस्टम के द्वारा हत्या ||

धर्मेश

||| संजीवनी |||

अब तो बस ख्वाबों में ही रह गई तस्वीर भी तेरी पास नहीं, संजीवनी की तरह हो गई है कुछ ज़िक्र भी है तेरा और पहचान में भी नहीं।

> कहने को तो ढूंढ उसको भी लें पर पाना तुझे मुनासिब अब नहीं, जिक्र तुम्हारा करने से हम झिझकते जो नहीं।

मशहूर खुल्लेआम करते तुमको गर किया तो नहीं, गिड़गिड़ाना चाहत के लिए बस मुनासिब था नहीं।

> किश बात इस की रह गई रोका जो तुझको नहीं; अब तो बस ख्वाबों में ही रह गई तस्वीर भी तेरी पास नहीं।

रोकते तुमको टोकते सुनते सुनाते जो समय बीतता, उसको चाहत से भी रोक ना पाता नहीं।

> लिखता जाता तुमको और लफ़्ज़ों को पिरोता, पिरोता कैसे जो तुम रुके ही नहीं।

अब तो बस ख्वाबों में ही रह गई तस्वीर भी तेरी पास नहीं, संजीवनी की तरह हो गई है कुछ ज़िक्र भी है तेरा और पहचान में भी नहीं।

Rahul Dev Gautam

||| Who you want to Be, the Choice is yours |||

S. No	Leader	Boss
1.	Teach you why and how to do it.	Tell you what to do.
2.	Emotional and people expert.	Subject Matter expert.
3.	Want you to feel successful.	Need you to perform.
4.	Build your confidence for self accountability.	Hold you accountable.
5.	Measure success by passion and impact of the people they influence	Measure success by a title or rank in a hierarchy.
6.	Independent of authority and Position.	Dependent on authority and position.
7.	Focus is on what is right.	Focus is on what is right now.
8.	Operate with a legacy in mind.	Operate with competition in mind.
9.	Driven by passion and purpose.	Driven by fear and reaction.
10.	Want you to do better than they did.	Want to always be your boss.
11.	Get joy from other's Success.	Get joy from their success.
12.	Build your confidence so you will tell them what they need to hear.	Build your fear so you will tell them what they want to hear.

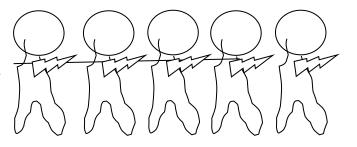
Leader

Work

Boss



Work



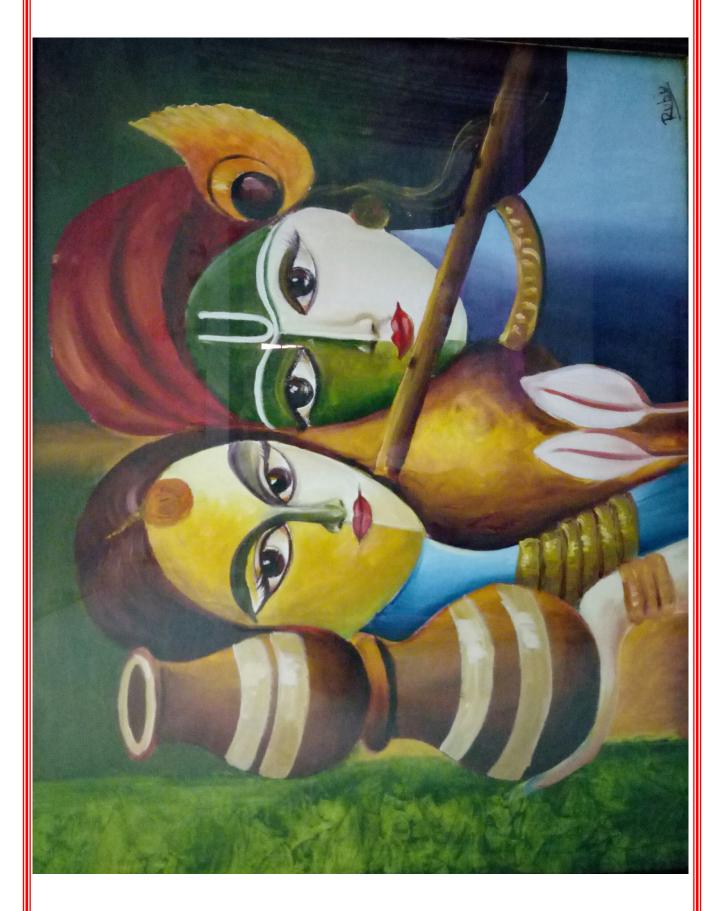
Meenakshi



Made by: Aditya Dwivedi



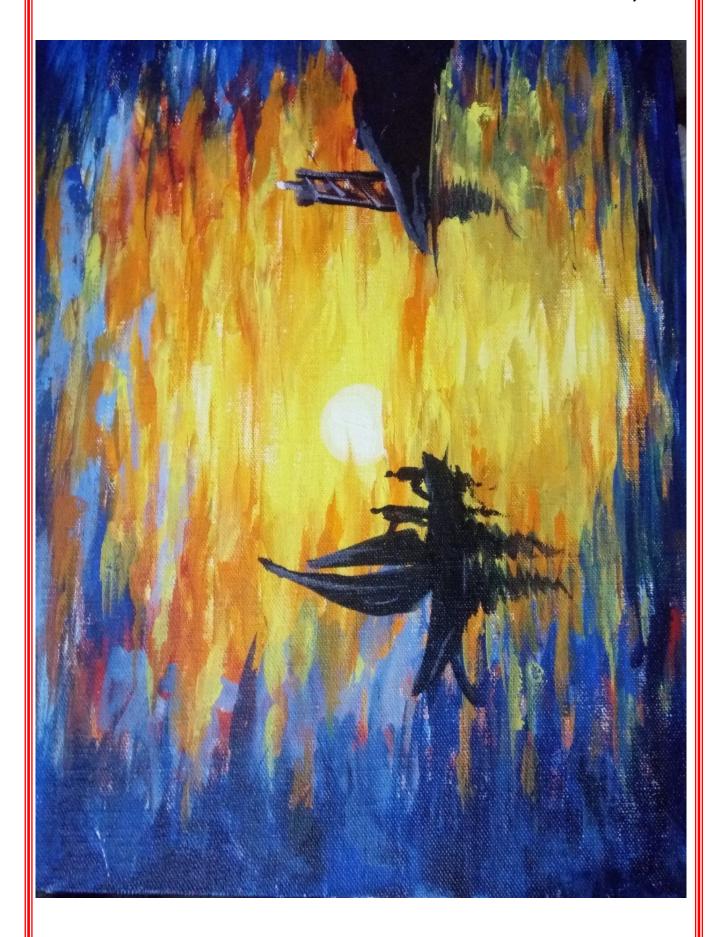
Made by: Arvind Kant



Made by: Ruby Sharma

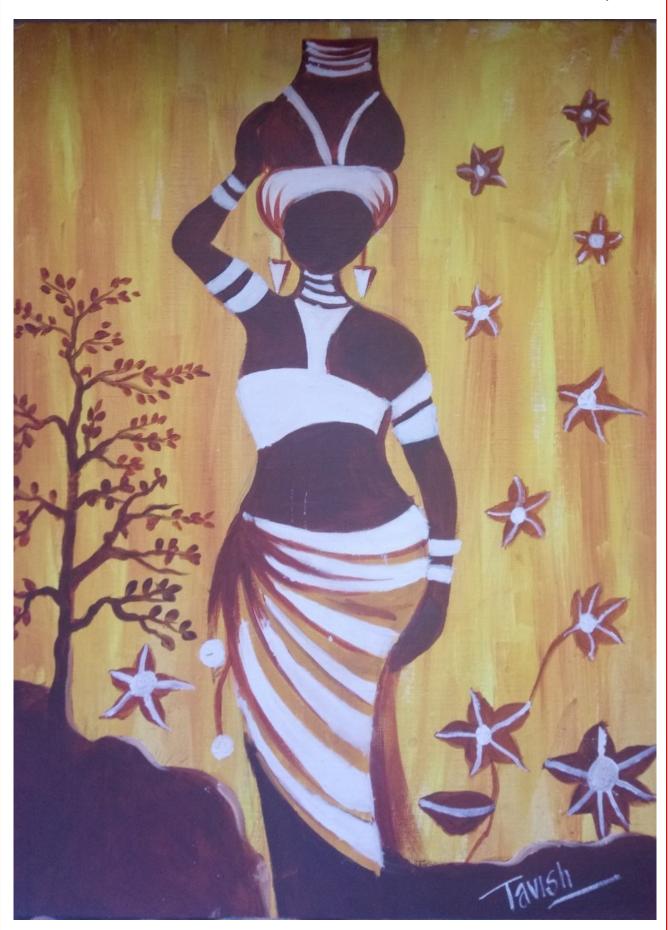


Made by: Nehal Sharma



Made by: Priyanshu Bisht

26 जनवरी, 2019



Made by: Tavish Bisht





Made by: Ghritashi Nadda





Made by: Sucheta Roy

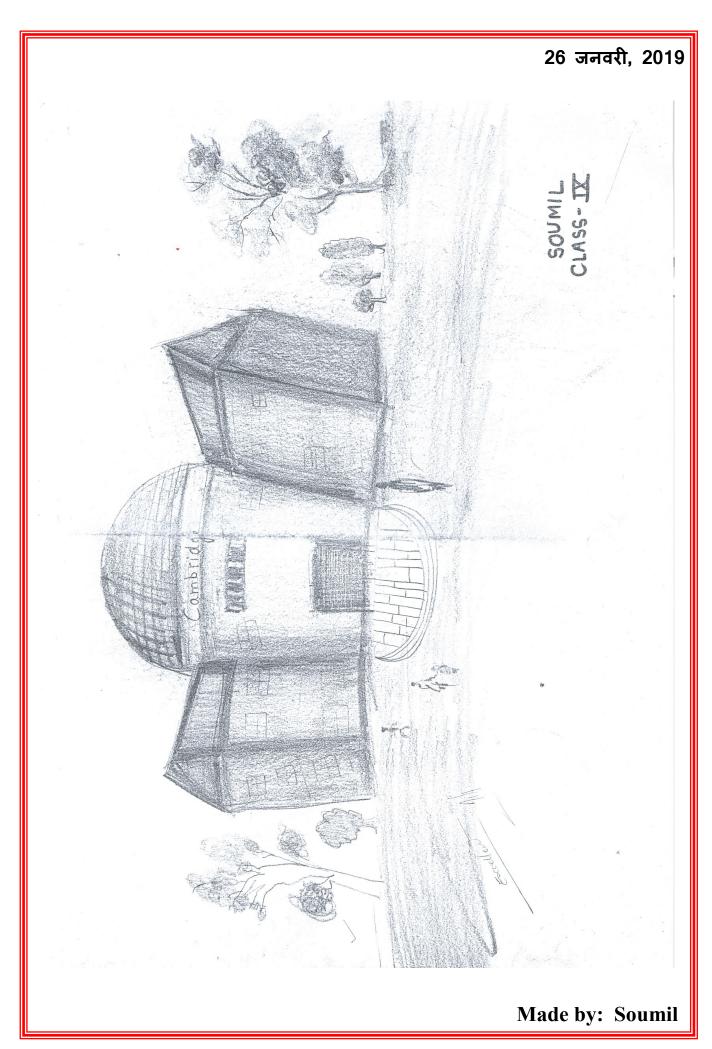






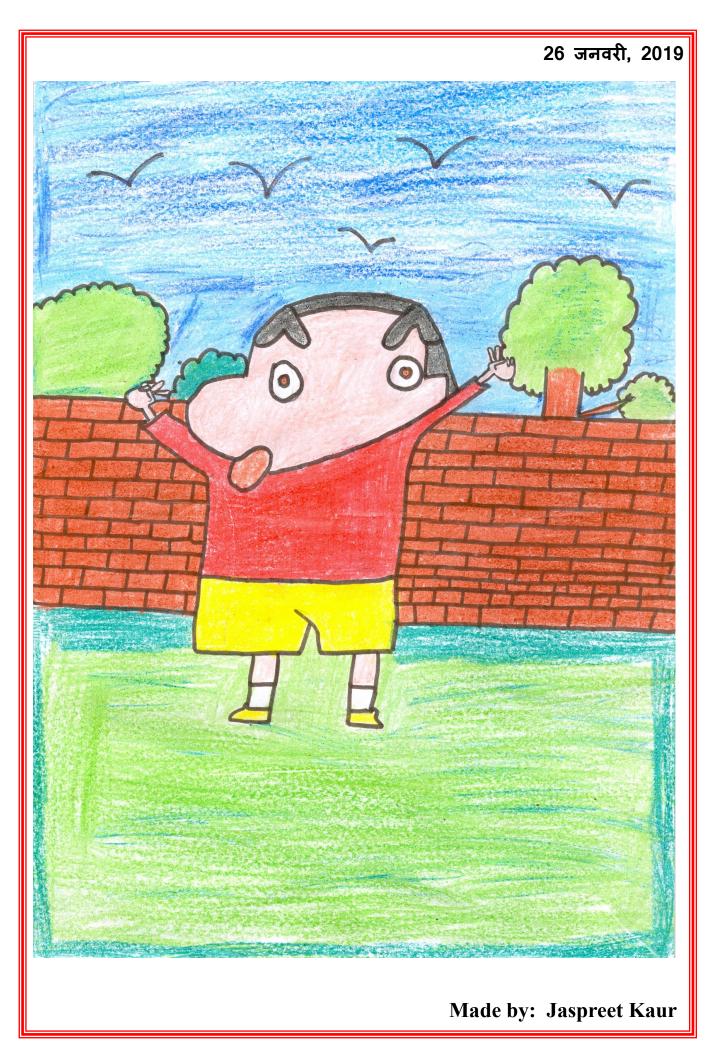


Made by: Arvind Kant

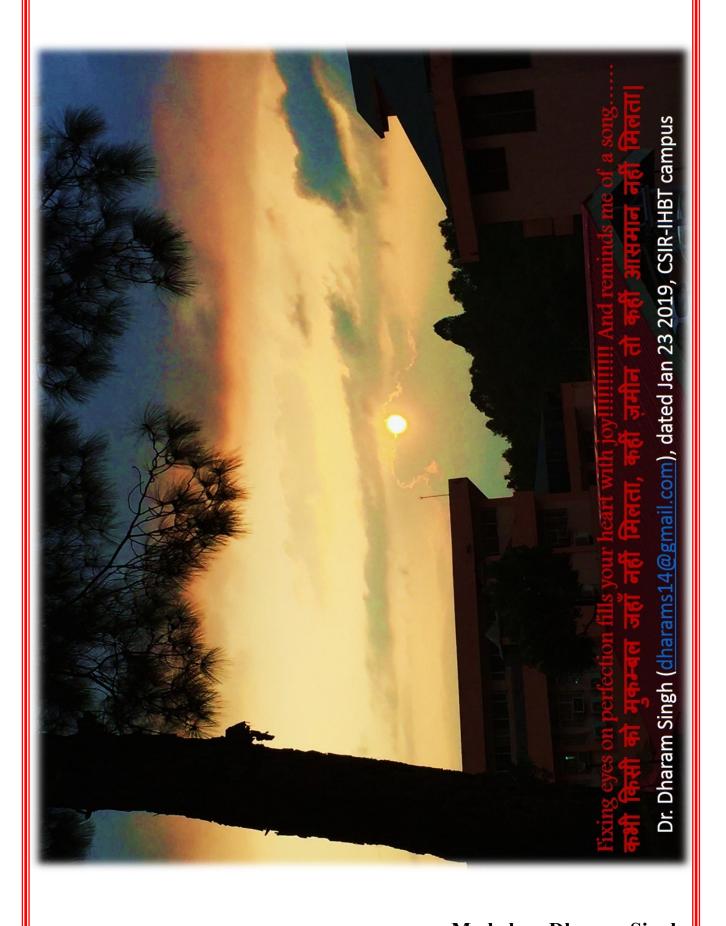




Made by: Askini Sharma



26 जनवरी, 2019 Made by: Umakshi



Made by: Dharma Singh



